संघ की 95 सालों में तैयार की हुई नफरत की नाली भाजपा के 4 साल में चौतरफा बह निकली

नफरत और हिंसा की घटनाओं पर गुरशेर का विश्लेषण

धर्म खतरे में, देश खतरे में, गौमाता खतरे में, हिंदू समाज खतरे में है, इस काल्पनिक खतरे से हमें निपटना है यानी कि मुसलमानों से निपटना है। मानसिक रूप से नफरत की विचारधारा से पोषित तथाकथित देशभक्त अपनी देशभक्ति स्वाभाविक ही निहत्थे मुसलमानों को मारकर उनकी बच्चियों से बलात्कार करके ही निकालेगा...

कठुआ कांड ने साबित कर दिया है कि संघ अपनी नफरत की विचारधारा किस हद तक लोगों में बसा चुका है। मुसलमान होने की वजह से अभियुक्तों ने उस बच्ची के साथ हैवानियत की हदों से परे जाकर घोर अमानुषिक और बर्बरता का परिचय देते हुए रेप जैसा जघन्य अपराध किया, वह वह हर संवेदनशील इंसान को सन्न कर देने वाला है।

यह उस नफरत की विचारधारा की बानगी भर है, जिसको धार्मिकता का लबादा ओढ़ाकर मानसिक गुलाम लोगों के जेहन में भर दिया गया है। यहां मैं कट्टर शब्द का इस्तेमाल नहीं कर रहा, क्योंकि कट्टरता भी बर्बरता और हैवानियत नहीं दिखाती, जितनी इस नफरत ही विचारधारा ने दिखाई है।

मॉब लीचिंग की ताबड़तोड़ घटनाओं के बाद जहां एक पूरा समुदाय भय और दहशत में जी रहा है, वहीं ऐसी घिनौनी रेप की घटना ने सभी संवेदनशील लोगों को झकझोर कर रख दिया है। शंभू रैगर द्वारा की गई बेकसूर मुस्लिम बुजुर्ग की हत्या और उसको धार्मिक उन्माद का रंग देना साफ-साफ इशारा करता है कि संघ द्वारा इस विचारधारा का पालन-पोषण वैचारिक रूप से किस तरह किया जा रहा है। इसको बड़े शातिराना तरीके से जाहिलपने के शिकार लोगों के मन में स्थापित किया जा रहा है।

संघ की शाखा में जाने वाले एक छोटे बच्चे ने बताया कि वहां देशभक्ति के गाने सुनाए जाते हैं। हैरानी की बात नहीं, दरअसल यह इंसानी भावनाओं को मोड़ने की शुरुआत है। देशभक्ति के गानों और भारत माता की जयकारा के नारे लगाकर पहले भावुकता को बढ़ाया जाता है फिर भारत माता और धर्म के नाम पर हुए फर्जी अत्याचारों की बात की जाती है। धर्म विशेष यानी मुस्लिमों के आतंक, बर्बरता की झूठी—सच्ची ऐतिहासिक कहानियां सुनाकर सारी हिंदूवादी भावनाओं को नफरत में बदलने का काम किया जाता है। शाखाओं में तैयार हो रही पीढ़ी मुस्लिम नाम से ही नफरत करने लगती है।

संघ की शाखाओं में सिखाया—पढ़ाया जाता है धर्म खतरे में, देश खतरे में, गौमाता खतरे में, हिंदू समाज खतरे में है और इस काल्पनिक खतरे से हमें निपटना है, यानी कि मुसलमानों से निपटना है। मानसिक रूप से अच्छी तरह से परिवर्तित नफरत की विचारधारा से पोषित तथाकथित देशभक्त अपनी देशभक्ति स्वाभाविक ही निहत्थे मुसलमानों को मारकर उनकी बच्चियों से बलात्कार करके ही निकालेगा।

पिछले 95 सालों से संघ अपनी इस विचारधारात्मक नफरत को कहां कहां और कैसे कैसे फिट कर चुका होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। संघ की पैठ हर जगह है। पुलिस में, प्रशासनिक अफसरशाही में, सेना में और शैक्षणिक संस्थाओं में हर जगह। खतरा बड़ा है।

देश इस समय अघोषित तानाशाही के साथ फासीवाद को झेल रहा है, इसके साथ यह भी कड़वा सच है कि यह खतरा आज या कल अचानक नहीं उठा, इसकी जड़ें भारत की आजादी की लड़ाई के साथ साथ उन पुरानी हजारों सालों की श्रेष्ठती की ग्रंथि में छुपी है। आर्यों की श्रेष्ठता की ग्रंथि 1919 में हिटलर के उभार के साथ ही उभरी, उससे प्रेरणा लेते हुए 1925 में संघ की स्थापना की गई। इस खतरनाक संगठन को गांधी की हत्या का बड़ा और ऐतिहासिक अपराध करने के बाद भी तत्कालीन जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल द्वारा अभयदान दिया गया। बेशक उस समय किए गए सहयोग और फलने-फूलने के भरपूर मौके के कारण ही यह यहां तक पहुंचा है। एक लाइन में कहें तो संघ के इतने फलने—फूलने में कांग्रेस का योगदान ज्यादा रहा। संप्रदाय विशेष से नफरत वाली स्थिति में देश को पहुंचाने में कांग्रेस की खासी भूमिका रही। देश के हर जागरूक, संवेदनशील इंसान को हर हाल में आवाज उठानी होगी। कठुवा और उन्नाव जैसी घटनाएं समाज को और शर्मसार न करें, इसका एकमात्र तरीका सामाजिक चेतना के फैलाव के साथ इन घटनाओं का कड़ा प्रतिरोध। नहीं तो यह घटनाएं बढ़ती रहेंगी और समाज को तोड़ती रहेंगी।

1400 साल से आज तक मुसलमानों की सोच चटाई और मिट्टी के लोटे से बाहर नहीं आई और दुनिया कम्प्यूटर ऐज से होती हुई मंगल पर खड़ी है

साकिब जमाल

किस ने हैक कर लिए इस फ़तेह कौम के दिमाग़ को, जहाँ सोचने के लिए सिर्फ टखनो से ऊँचा पाजामा, एक मुश्त चार ऊंगल दाढ़ी । बाकी सारी दुनिया दोज़ख के कुत्तों का कारखाना है और उन्ही दोज़ख के कुत्तों की टेक्नोलॉजी ने सारी दुनिया को अपना गुलाम बना रखा है । ज़मीन के नीचे क्या होगा यह आपको मालूम है । ज़मीन के ऊपर आसमानों की पूरी जानकारी आपके पास है । मगर जो दुनिया आप के लिए तख़लीक़ की गयी हैं, उस के लिए आप जाहिल लठ हो । दूसरी कौमे ज़मीन से यूरेनियम निकाल रही है और उसका इस्तेमाल जानती है आप सिर्फ आबे ज़मज़म के फायदे गिना रहे हो ।

दूसरी कौमों ने दुनिया की बक़ा के लिए हज़ारों ज़बानों में किताबें लिखी और पढ़ीं । आपने क़ुरान भी सही से पढ़ा नहीं सिर्फ हिलकर रटा । दूसरी कौमों ने आने वाली नस्लों के लिए हज़ारों यूनिवर्सिटीयाँ कायम की, आप नकली रसीदें छपवा कर मदरसों के नाम पर मांगते रहे । दूसरी कौमों ने लाखों अस्पताल कायम किए, आप सिर्फ़ दुआओं में शिफाए, कामला व आजला चिल्लाते रहे ।

दूसरी कौमों ने आवाज़ से भी तेज़ चलने वाली सवारियाँ ईजाद कर लीं, आप रफरफ और फरिशताऐ मलेकुल मौत की रफ़्तार बयान करते रहे । इस खूबसूरत दुनिया मे आप की कोई हिस्सेदारी क्यों नहीं ? आप कहते है बैंकिंग सिस्टम आपने दिया फिर आपका विश्व बैंक में क्या है ? यह बैंक आप के यहाँ क्यों नहीं ? आप कहते है प्रेस आपकी ईजाद है, फिर भी आप किताबों से ख़ाली हैं सिवाए मज़हबी किताबों के । यह एक कड़वी सच्चाई है। अगर कुछ इस्लामी मुल्कों में पेट्रोल, सोना, खजूर, जैतून पैदा ना हो रहा होता तो आज भी आप तंबू लगाकर रेत के टीलों में ख़ाना बदोशी कर रहे होते और जिन चंद इस्लामी देशों पर आप घमंड करते है तो वह भी अमेरिका के ऐजेंडों पर काम कर रहे हैं उनके ऐश व आराम, चमक-दमक, अय्याशी, बादशाही सिर्फ अमेरिका पर टिकी है । वरना ईराक व सीरिया बनने मे तीन दिन से ज्यादा नहीं लगेंगे, क्योंकि वह भी आप की सोच के जनक हैं ।

ना एयरफोर्स, ना आर्मी, ना इत्तेफाक, ना इत्तेहाद बस बड़े-बड़े हरम, पांच-पांच बीवियाँ, दस-दस रखैलें, सोने के जहाज़, सोने की मर्सेडीज़, पालतू शेर, ऐश व अय्याशी। और आप ईसाइयों और यहूदियों के बनाए हथियार और टेक्नोलॉजी से पूरी दुनिया में ईस्लाम की हुकूमत लाने की सोच रहे हैं । कहाँ जा रहे हैं आप ? क्या दुनिया में पनपने की यही बातें है । इतनी बड़ी कौम की बदहवासी की सिर्फ एक ही वजह है और वह है आप की सोच पर कुछ खुद साख़ता मज़हबी ठेकेदार ज़हरीले साँप की तरह कुंडली मारे बैठे हैं। जहाँ आप की सोच बाहर निकली इनका ज़हरीला फ़न वार कर देता है । आप दूसरों की कायम करदा सोच के गुलाम हैं । आपकी अपनी सोच लॉक कर दी गयी है।

अब भी वक्त है अपने रब की नेमतों को पहचानो, नीयत से ज़्यादा ज़हनियत बदलो ॥

मोदी सरकार को मुस्लिम विरोधी बताने वाले मानवाधिकारों के बड़े पैरोकार जस्टिस राजेंद्र सच्चर का निधन

जनज्वार, दिल्ली दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस और सच्चर कमेटी के चेयरमैन रहे राजेंद्र सच्चर का आज निधन हो गया है। इलाज के दौरान 94 साल में दिल्ली के एक प्राइवेट अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांसें लीं।

शाम 5.30 बजे लोधी रोड के विद्युत शहदाहगृह में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

राजेंद्र सच्चर को मानवाधिकार के बड़े पैरोकार के तौर पर देखा जाता था. 20 दिसंबर 1923 को पैदा हुये राजेंद्र सच्चर के दादा भी लाहौर के बड़े वकील थे।

सच्चर ने लाहौर से वकालत की पढ़ाई की थी और 1952 में उन्होंने शिमला से अपने वकालती पेशे की शुरुआत की। 8 दिसंबर 1960 से उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में वकालत करना शुरु किया। सबसे पहले वो चर्चा में तब आए थे जब उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री पंजाब सिंह कैरो के खिलाफ प्रजातांत्रिक पार्टी को अपना समर्थन दिया

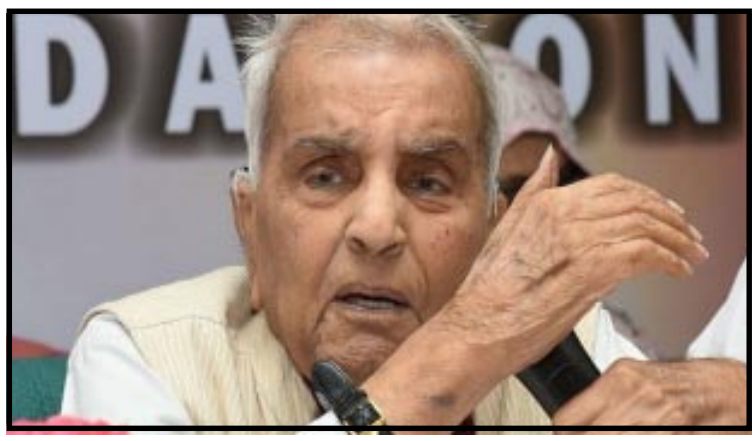

था। 12 फरवरी 1970 को पहली बार दिल्ली हाईकोर्ट में जज नियुक्त किए गए। उसके बाद 1975 में सिक्किम हाईकोर्ट के कार्यकारी मुख्य जज बनाए गए। 1976 में राजस्थान हाईकोर्ट के जज बने, मगर यह उनकी सहमति के बगैर नहीं था, तो उन्होंने राजस्थान हाईकोर्ट जाने का विरोध किया था। मानवाधिकार संगठन पीयूसीएल से जुड़े सच्चर के साथ 2005 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने मुस्लिमों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति के मद्देनजर एक समिति गठित की थी। यह पहली बार हुआ था कि मुस्लिमों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति को लेकर कोई रिपोर्ट संसद में पेश की गई, जोकि अब एक मील का पत्थर बन चुकी है। राजेंद्र सच्चर ने मोदी सरकार पर बयान दिया था कि देश में मुसलमान मोदी शासन में दहशत में जी रहे हैं। मोदी सरकार में मुसलमान डरे हुए हैं। मोदी ने मुसलमानों की बेहतरी के बजाय उनमें दहशत पैदा की जा रही है।

राजेंद्र सच्चर ने कहा था कि खुद को हिंदू कहलाने वाले लोग आमिर और शाहरुख को देश छोड़ने की नसीहत देते हैं, क्योंकि वह मुसलमान हैं। यह अपने आप में असहिष्णुता है, मोदी सरकार मुसलमानों की तरक्की और सुरक्षा मामले में फेल है। मुसलमानों को आरक्षण देने के हिमायती जस्टिस सच्चर ने कहा था कि मुसलमानों के साथ हो रही दोहरी नीति पर मोदी सरकार कोई शर्म नहीं महसूस करती, बल्कि मुसलमानों में फैल रहे डर और दहशत के लिए मोदी सरकार जिम्मेदार है। मुस्लिमों के अंदर से डर कम करने की सरकार ने कोई पहल नहीं की है।

जस्टिस सच्चर ने कहा था कि मोदी सरकार बार-बार यह जताने की कोशिश कर रही है कि केंद्र सरकार सिर्फ हिंदुओं की है, हिंदुओं के अलावा इस देश में किसी को भी रहने का हक नहीं है, मुसलमानों का तो खास तौर पर नहीं है।

एक इंटरव्यू में दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और सच्चर कमेटी के प्रमुख सेवानिवृत्त जस्टिस राजेंद्र सच्चर ने आशंका जतायी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) 2019 में भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करवाएगा। देश में पिछले कुछ समय में मुसलमानों के खिलाफ हिंसा के बढ़ते मामले से जुड़े एक सवाल के जवाब में जस्टिस सच्चर ने कहा था कि मोदी शासन में मुसलमानों के खिलाफ नफरत से उपजी हिंसा के मामले बढ़े हैं और ये केवल असहिष्णुता का मामला नहीं है।